

---

# ku njavihAryaShTakam 1

कुञ्जविहार्यष्टकम् १

## Document Information

---

Text title : Kunjavihari Ashtaka 1

File name : kunjavihAryaShTakam1.itx

Category : aShTaka, vishhnu, krishna, vishnu, rUpagosvAmin, stavamALA

Location : doc\_vishhnu

Author : Rupagoswami

Transliterated by : PSA Easwaran

Proofread by : PSA Easwaran

Description-comments : From stavamALA (rUpagosvAmivirachita) Garland of Devotional Prayers  
stavamALA

Source : Sthothra Rathnaakaram, edited by N. Bappuravu, 2010

Latest update : August 6, 2016

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 25, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

कुञ्जविडार्यष्टकम् १



प्रथमं श्रीकुञ्जविडार्यष्टकं

छन्दनीलमणिमञ्जुलवर्णः कुल्लनीपकुसुमाञ्चितकर्णः ।

कृष्णलाभिरकृशोरसिडारी सुन्दरो जयति कुञ्जविडारी ॥ १ ॥

राघिकावदनचन्द्रयकोरः सर्ववल्लववधूधृतिथोरः ।

चर्यरीयतुरताञ्चितयारी चारुतो जयति कुञ्जविडारी ॥ २ ॥

सर्वताः प्रतिथकौलिकपर्वध्वंसनेन हृतवासवगर्वः ।

गोष्ठरक्षार्णकृते गिरिधारी लीलया जयति कुञ्जविडारी ॥ ३ ॥

रागमण्डलविभूषितवंशी विभ्रमेणामदनोत्सवशंसी-

स्तूयमानचरितः शुक्लशारिश्रोणिभिर्जयति कुञ्जविडारी ॥ ४ ॥

शातकुम्भरुचिडारिदुकूलः डेडियन्द्रकविराजितयूडः ।

नव्ययौवनलसद्व्रजनारीरञ्जनो जयति कुञ्जविडारी ॥ ५ ॥

स्थासकीकृतसुगन्धिपटीरः स्वर्णकाञ्चिपरिशोभिकटीरः ।

राघिकोन्नतपयोधरवारीकुञ्जारो जयति कुञ्जविडारी ॥ ६ ॥

गौरधातुतिलकोज्ज्वलङ्गालः डेलियञ्चलितयम्पकमालः ।

अद्रिक्न्दरगुह्येभिसारी सुलुवां जयति कुञ्जविडारी ॥ ७ ॥

विभ्रमोञ्चलदृगञ्चलनृत्यक्षिभगोपललनाभिलङ्कृत्यः ।

प्रेमभक्तवृषभानुकुमारीनागरो जयति कुञ्जविडारी ॥ ८ ॥

अष्टकं मधुरकुञ्जविडारी कीडया पठति यः डिल डारी ।

स प्रयाति विलसत्परभागं तस्य पादकमलार्चनरागम् ॥ ९ ॥

एति श्रीरूपगोस्वामिविरचितस्तवमालायां श्रीकुञ्जविडारिणः

प्रथमाष्टकं समाप्तम् ।

*ku njavihAryaShTakam 1*

pdf was typeset on November 25, 2021

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

